मार्च- मई 2007

चहकती चेतना

त्रैमासिक
बाल पत्रिका

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

कहानी

धन्य मुनि गुरुदत्त

हस्तिनापुर के राजा विजयदत्त के मुनिदीक्षा लेने के पश्चात् उनके पुत्र गुरुदत्त राजा बने। वह सुंदर, गंभीर एवं सरल स्वभावी थे।

उनके राज्य में द्रोणी नाम का पर्वत था। वहां एक विकराल सिंह रहता था। उसके भय से जनता बहुत दुःखी थी। जनता की प्रार्थना पर उनकी रक्षा हेतु राजा गुरुदत्त ने सिंह की गुफा में चारों ओर से आग लगा दी। सिंह गुफा से नहीं निकल सका और जलकर मर गया। वह सिंह मरकर कपिल ब्राम्हण नाम का किसान हुआ। राजा गुरुदत्त ने भी संसार से विरक्त होकर मुनिदीक्षा ले ली।

एक दिन कपिल ने अपने खेत में मुनि गुरुदत्त को तपस्या करते देखा। तो उसने वह खेत नहीं जोता एवं दूसरे खेत में चला गया। तथा मुनि से कहा - मेरी पत्नी भोजन लेकर आयेगी तो उसे मेरे पास दूसरे खेत पर भेज देना।

पत्नी ने आकर मुनिराज से कपिल के बारे में पूछा। परंतु मुनिराज आत्म साधना में लीन थे इसलिये उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। कपिल को न देख पत्नी वापस घर आ गई। भूख से व्याकुल कपिल घर आकर पत्नी पर बहुत क्रोधित हुआ। क्रोध में कपिल ने द्राणगिरी पहाड़ पर पहुंचकर मुनिराज के शरीर पर रुई लपेटकर आग लगा दी। मुनिराज ने कठोर उपसर्ग को धीरता से सहन किया एवं अंत में शुक्ल ध्यान के प्रभाव से केवलज्ञान प्राप्त किया।

बाद में कपिल को भी अपने किये पर बहुत पश्चाताप् हुआ एवं उसने भगवान के पास जाकर अपने अपराध की क्षमा मांगकर मुनि दीक्षा ले ली।

देखो बच्चों! सत्पुरुषों का संग सदा सुखदायी होता है। एक महाक्रोधी ब्राम्हण एक क्षण में योगी हो गया। इसलिये हमें सदा अपने को सत्संग से पवित्र करते रहना चाहिए।

- बोधि समाधि निधान से साभार

अनोखा जन्मदिन

सिद्ध - (आतम को जाता देखकर) - अरे आतम! ओ भाई आतम! अरे सुनो तो।

आतम - (पीछे मुड़कर) अरे सिद्ध भैया आप ! जय जिनेन्द्र। क्षमा करिये मैं तो अपनी धुन में इतना मगन था कि आपकी आवाज ही नहीं सुन पाया।

सिद्ध - लेकिन इतने तेज कहाँ जा रहे हो और कौनसी धुन में मगन थे ?

आतम- अरे भैया ! आपको नहीं पता कल मेरा जन्मदिन है। दीदी ने आपको घर आने का निमंत्रण नहीं दिया क्या ?

सिद्ध - घर पर कहा होगा ! मुझे नहीं पता लेकिन कार्यक्रम क्या है और तुम कहाँ जा रहे हो ?

आतम - भैया अभी मैं बाजार जा रहा हूँ, केक का आर्डर देने। शाम तक मिल जायेगा और कुछ नमकीन मिठाई, गुब्बारे, मोमबत्ती और सजावट का सामान भी लाना है।

सिद्ध - लेकिन आतम.....?

आतम - लेकिन वेकिन कुछ नहीं। कल शाम को आप भी आइयेगा, मेरे सारे दोस्त आ रहे हैं। रात को बर्थडे सेलीब्रेट करेंगे और डांस करेंगे।

(सिद्ध उदास हो जाता है - सिद्ध को उदास देखकर)

आतम - भैया ! आप उदास क्यों हो गये ? क्या मैंने कुछ गलत कहा ?

सिद्ध - मुझे समझ में नहीं आ रहा तुम इतने समझदार होकर भी ऐसी गल्ती कर रहे हो।

आतम - क्या जन्मदिन मनाना गलत है ? सभी लोग ऐसा करते हैं।

सिद्ध - सभी लोग गलत काम करते हैं तो क्या तुम भी गलत काम करोगे।

आतम - लेकिन जन्मदिवस मनाने में बुराई क्या है ?

सिद्ध - आतम ! ये कोई आनंद या उल्लास का दिन नहीं, बल्कि चिंतन का दिन है।

आतम - क्या मतलब ?

सिद्ध - देखो आतम ! वैसे तो जन्म-मरण जीव का स्वभाव नहीं है और जिस जन्म में असहनीय कष्ट सहन करना पड़ते हों उस दिवस को क्या याद करना। और आतम ! ये बताओ तुम्हारे जीवन के वर्ष में आज उम्र बढ़ गयी या कम हो गयी है ?

आतम - एक साल कम हो गया।

सिद्ध - इसलिये तुम बारह मोमबत्ती बुझाओगे और एक जलती रहेगी वह भी गल रही है ऐसे ही हमारी उम्र का एक-एक दिन कम हो रहा है। जरा सोचो तो ?

आतम- लेकिन जन्मदिन मनाये बिना मन नहीं मानता।

सिद्ध - मनाओ लेकिन तरीका अलग हो।

आतम - वो कैसे ?

सिद्ध - अरे भाई ! सुबह जल्दी उठकर चिंतन करो, मैंने अपना कितना समय व्यर्थ खो दिया और मुझे अपना कल्याण करना है। फिर स्नान करके मंदिर जाकर पूजन अवश्य करना और बारह भावना का पाठ करना। हो सके तो पापा जी से छोटा विधान करवाने हेतु बोलना। अभक्ष्य नहीं खाना और रात्रि भोजन नहीं करना। हो सके तो आसपास के तीर्थ क्षेत्र अथवा जिन मंदिर जाना चाहिए और दान देना चाहिए।

आतम - वाह भैया ! अब मैं ऐसा ही करूंगा दूसरे दिन आतम के घर पर सिद्ध भैया ने बधाई दी।

जल्दी से भगवान बनो तुम।
जन्म-मरण का नाश करो तुम॥
सात तत्त्व का ज्ञान करो तुम।
जीव अजीव पहिचान करो तुम॥
जल्दी से भगवान बनो तुम।
जनम मरण का नाश करो तुम॥

जय जिनेन्द्र..

सुबह उठे मम्मी से बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र

पापा से भी बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र

दादा से दादी से बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र

दीदी से भैया से बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र

चांवल ले मंदिर में आये
पंडित जी को देखकर बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र

पुस्तक ले पाठशाला आये
दीदीजी को देखकर बोले हम
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र

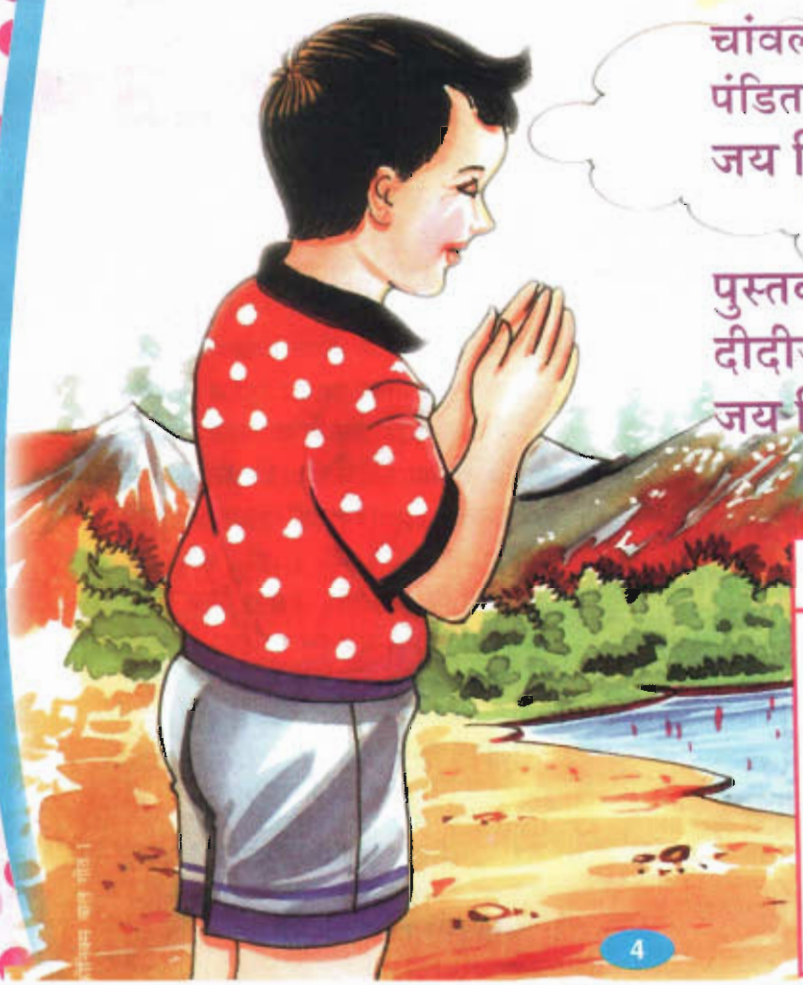

रंग भरो और एक नया सूरज बनाओ।

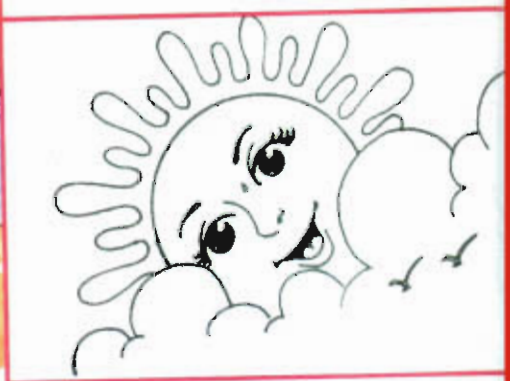

हमारे आराध्य नवदेव

अरिहंत

आचार्य

उपाध्याय

साधु

सिद्ध परमेष्ठी

हमारे पूज्य पंच परमेष्ठी में दूसरे परमेष्ठी का नाम सिद्ध परमेष्ठी है। णमोकार मंत्र में हम णमो सिद्धाणं कहकर सिद्ध प्रभु को नमस्कार करते हैं। सिद्ध भगवान ने ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अंतराय, वेदनीय, आयु, नाम एवं गोत्र-इन आठ कर्मों का नाश कर सिद्ध पद प्राप्त किया है। सिद्ध बनने पर भगवान के क्षायिक दर्शन आदि आठ गुण प्रगट हो जाते हैं।सिद्ध भगवान मुक्त जीव हैं अर्थात् अब अनंत काल के लिये संसार चक्र के दुखों से छूटकर अनंत सुखों के नगर सिद्धालय के वासी बन गये हैं। सिद्ध भगवान लोक के अग्र भाग में किंचित् न्यून पुरुषाकार रूप से विराजमान हैं। समस्त कर्मों का अभाव होने से सिद्ध भगवान के पूर्ण आत्मिक गुण प्रगट हो गये हैं। हमें भी अपनी सिद्ध स्वभावी आत्मा को पहचानकर सिद्ध भगवान बनने का पुरुषार्थ करना चाहिये।

जिनवाणी

जिनबिम्ब

जिनधर्म

जिनालय

हमारे तीर्थ क्षेत्र

पावापुर जी सिद्धक्षेत्र

यह पावापुर जी सिद्धक्षेत्र है। जीव जिस स्थान से मोक्ष जाते हैं उसे सिद्ध क्षेत्र कहते हैं। वर्तमान काल के 24 तीर्थंकरों में से अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी ने यहाँ से मोक्ष प्राप्त किया। पावापुर जी भारत के बिहार राज्य के नवादा नामक स्थान से लगभग 12 कि. मी. दूरी पर स्थित है।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या वह पवित्र दिन है- जिस दिन भगवान महावीर ने आत्म शक्ति के द्वारा समस्त कर्मों पर विजय प्राप्त कर, इस दुःखद संसार चक्र का अंत कर, अनंत काल के लिये सुख स्वरूप मोक्ष पद प्राप्त किया। इसी दिन उन्हीं के प्रमुख गणधर गौतम स्वामी ने संध्या के समय केवलज्ञान की प्राप्ति की।अत: यही कारण है कि इस दिन को महावीर निर्वाण महोत्सव अर्थात् दीपावली के रूप में मनाया जाता है।

पावापुर में भगवान महावीर स्वामी की निर्वाण स्थली के स्थान पर एक जिनमंदिर स्थित है जिसके चारों ओर सरोवर है। इसी सरोवर में बीच के एक मार्ग से मंदिर जी तक जाने का रास्ता है। इसे जलमंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

इस युग के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की निर्वाण स्थली होने से इस पवित्र सिद्धक्षेत्र की वंदना कर हमें भी सिद्ध बनने का संकल्प करना चाहिए।

सीख

१. स्वस्थ बनो, पर मोटे नहीं।
२. चंगे बनो पर, निर्बल नहीं।
३. बलवान बनो, पर दुष्ट नहीं।
४. सरल बनो पर, पर मूर्ख नहीं।
५. धीर बनो पर, सुस्त नहीं।
६. न्यायी बनो, पर निर्दयी नहीं।
७. उत्साही बनो, पर जल्दबाज नहीं।
८. दृढ़ बनो, पर हठी नहीं।
९. समालोचक बनो, पर निंदक नहीं।
१०. प्रशंसक बनो, पर चापलूस नहीं।
११. स्पष्ट बनो, पर उद्दण्ड नहीं।
१२. चतुर बनो, पर कुटिल नहीं।
१३. मितव्ययी बनो, पर कंजूस नहीं।
१४. गंभीर बनो, पर मनहूस नहीं।
१५. सावधान बनो, पर वहमी नहीं।
१६. योगी बनो, पर रोगी नहीं।
१७. विनम्र बनो, पर याचक नहीं।
१८. साधु बनो, पर स्वादु नहीं।

क्रोध बड़ा शैतान है, खाता सारा ज्ञान है
क्रोध शांति का दुश्मन है,रखता घर में अनबन है।
क्रोध क्षमा से मिटता है, क्रोधी मानव मिटता है।
क्रोध बढ़े तब चुप्प रहो, अपने में ही गुप्प रहो।

चेतना को जिनमंदिर का रास्ता ढूंढने में मदद कीजिये

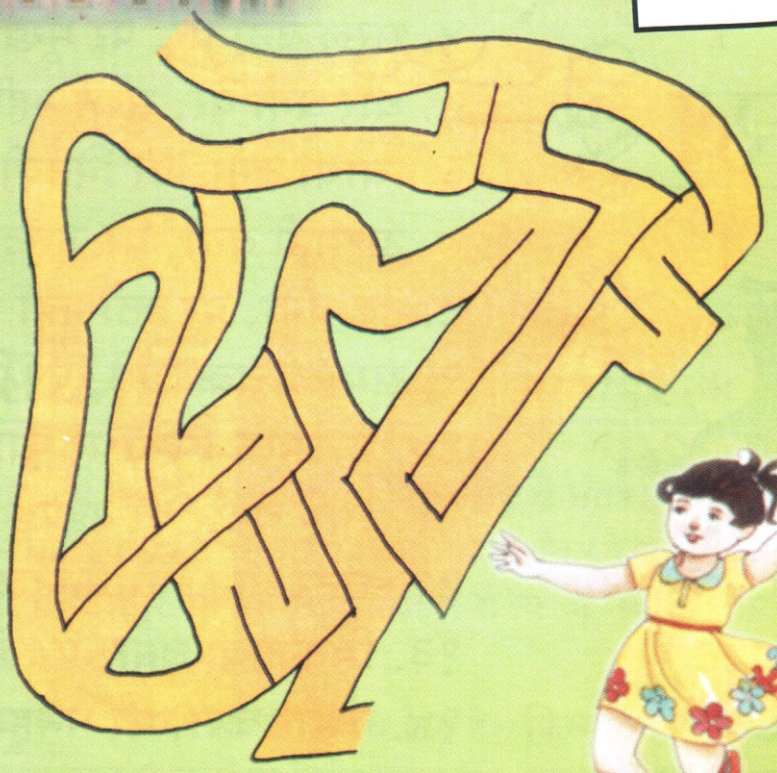

अवश्य सुनिये बाल गीतों का चतुर्थपुष्प

वीर प्रभु की हम संतान

प्राप्ति स्थान

विराग शास्त्री
सर्वोदय-702
जैन टेलीकाम फूटाताल,
जबलपुर- 482002
9300642434

बाल-युवा वर्ग के लिये अनुपम उपहार

हमने तो धर्म पाया

प्राप्ति हेतु करें संपर्क -
विवेक जैन
मंगलम् अनेकांत फाउण्डेशन
पहाड़े मेडीकल के बाजु में,
गोलगंज- छिंदवाड़ा (म.प्र.)
94243 74855
07162 - 245624

टन टन टन टेलीफोन.....

सिद्ध प्रभु का आया फोन।
यह दुनिया है अजब निराली,
चार गति में दुःख है भारी।
इन दुःखों की बात सुनी तो
चेतन हो गया बिल्कुल मौन ॥
टन टन .....

चार गति में अब न रहूंगा
सम्यक् दर्शन अभी करुंगा।
सिद्ध प्रभु सच्चे साथी हैं
इस दुनिया में अपना कौन ॥
टन टन .....

टन टन टन टेलीफोन

कौआ बोला काँव-काँव

कौआ बोला काँव-काँव, जाऊँ तो मैं जाऊँ कहाँ
बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ, कितने दुःख पाये यहाँ
चेतन राजा बतलाओ दुख से मुक्ति दिलवाओ
चेतन राजा बोला जिनवाणी को खोला
अपना आतम जानो निज में ही सुख मानो
पाप भाव को त्यागो अपने में ही लागो।
दुःखों से मुक्ति पाओगे सिद्धपुरी को जाओगे।

इन्हें भी जानिए:-

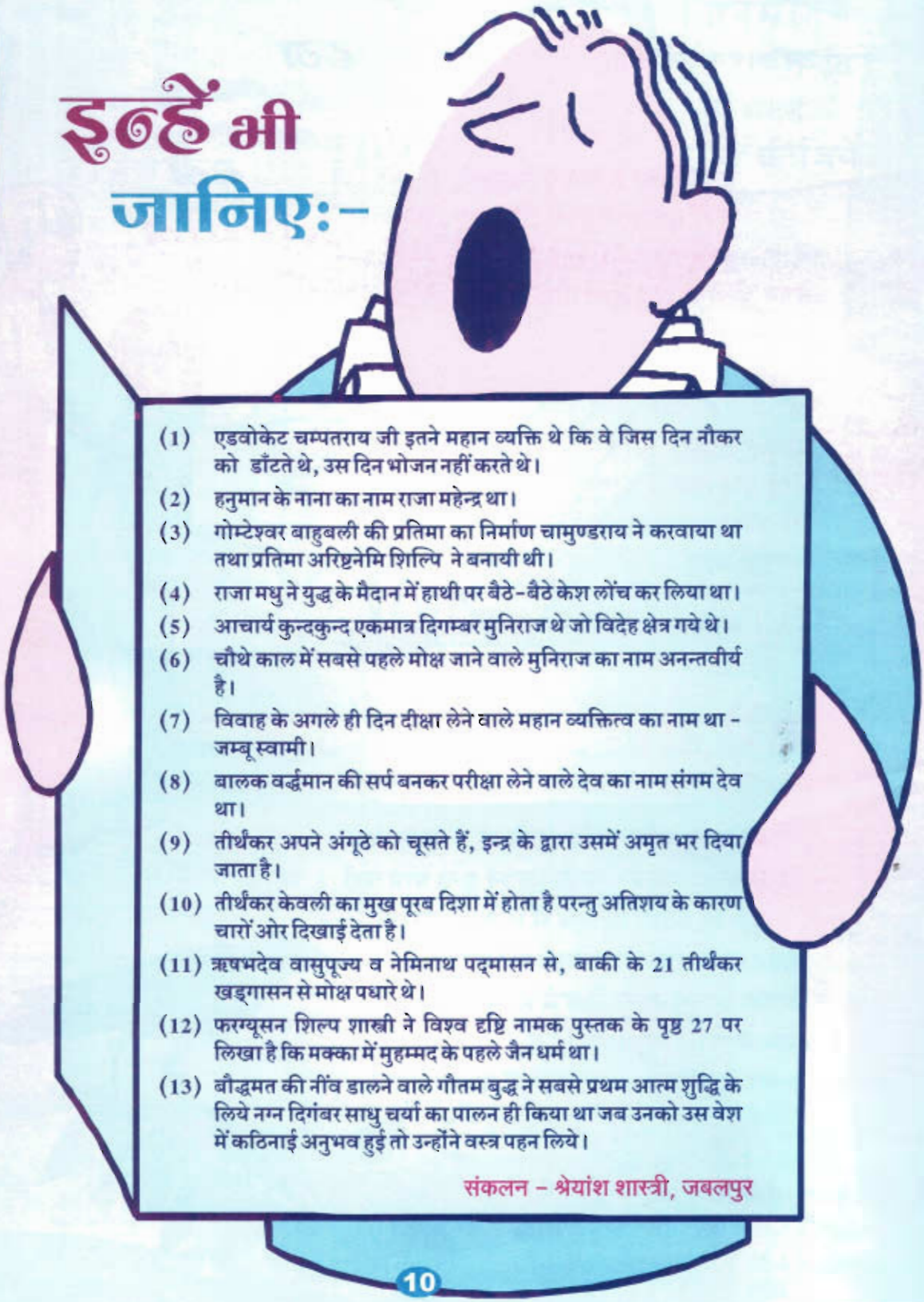

(1) एडवोकेट चम्पतराय जी इतने महान व्यक्ति थे कि वे जिस दिन नौकर को डाँटते थे, उस दिन भोजन नहीं करते थे।

(2) हनुमान के नाना का नाम राजा महेन्द्र था।

(3) गोम्टेश्वर बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण चामुण्डराय ने करवाया था तथा प्रतिमा अरिष्टनेमि शिल्पि ने बनायी थी।

(4) राजा मधु ने युद्ध के मैदान में हाथी पर बैठे-बैठे केश लोंच कर लिया था।

(5) आचार्य कुन्दकुन्द एकमात्र दिगम्बर मुनिराज थे जो विदेह क्षेत्र गये थे।

(6) चौथे काल में सबसे पहले मोक्ष जाने वाले मुनिराज का नाम अनन्तवीर्य है।

(7) विवाह के अगले ही दिन दीक्षा लेने वाले महान व्यक्तित्व का नाम था - जम्बू स्वामी।

(8) बालक वर्द्धमान की सर्प बनकर परीक्षा लेने वाले देव का नाम संगम देव था।

(9) तीर्थंकर अपने अंगूठे को चूसते हैं, इन्द्र के द्वारा उसमें अमृत भर दिया जाता है।

(10) तीर्थंकर केवली का मुख पूरब दिशा में होता है परन्तु अतिशय के कारण चारों ओर दिखाई देता है।

(11) ऋषभदेव वासुपूज्य व नेमिनाथ पद्मासन से, बाकी के 21 तीर्थंकर खड्गासन से मोक्ष पधारे थे।

(12) फरग्यूसन शिल्प शास्त्री ने विश्व दृष्टि नामक पुस्तक के पृष्ठ 27 पर लिखा है कि मक्का में मुहम्मद के पहले जैन धर्म था।

(13) बौद्धमत की नींव डालने वाले गौतम बुद्ध ने सबसे प्रथम आत्म शुद्धि के लिये नग्न दिगंबर साधु चर्या का पालन ही किया था जब उनको उस वेश में कठिनाई अनुभव हुई तो उन्होंने वस्त्र पहन लिये।

संकलन - श्रेयांश शास्त्री, जबलपुर

बिन्दुओं को मिलाकर जैन ध्वज का चित्र बनायें

लहर लहर लहरायें .....
केशरिया झंडा जिनमत का।

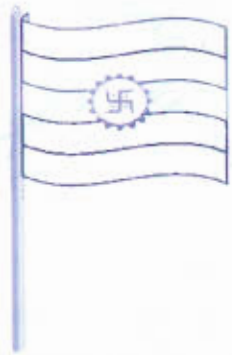

joint the dots and Draw the picture of flag

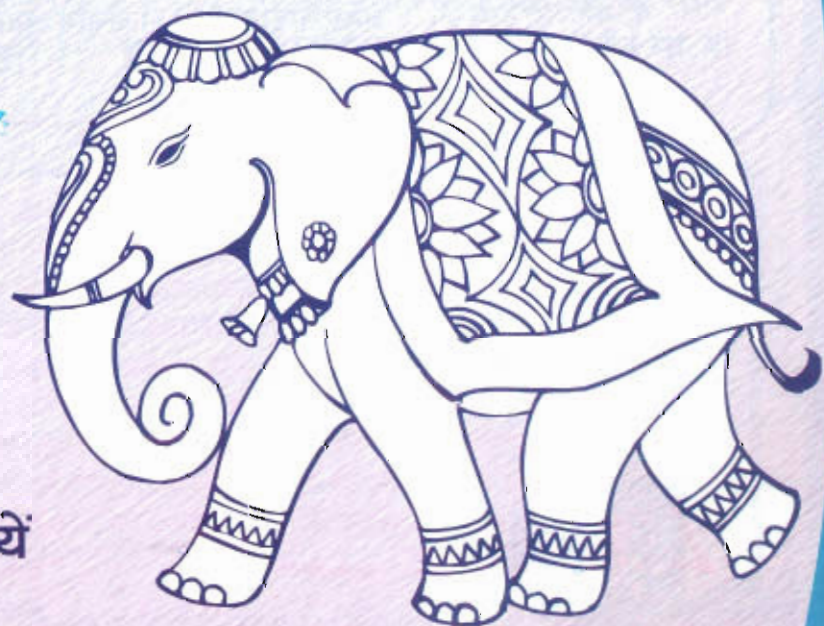

चित्र में रंग भरियें

Colour the picture

प्रेरक प्रसंग

उदारता

पं.बनारसीदासजी का काल्पनिक चित्र दुर्लभता से प्राप्त हुआ है -

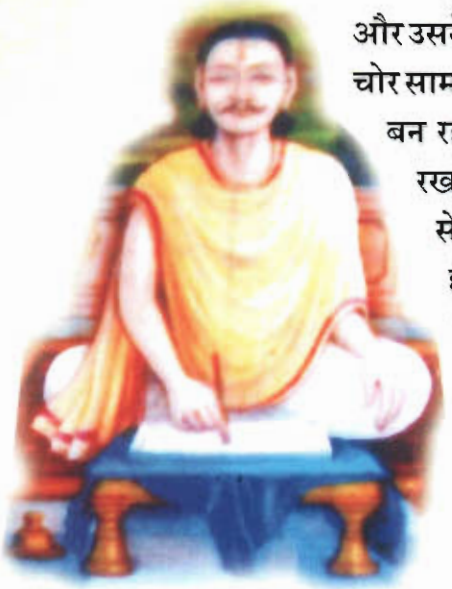

अध्यात्म रसिक विद्वान
पं. बनारसी दास जी

एक बार की बात है एक चोर किसी घर में चोरी करने गया और उसने घर का बहुत सारा कीमती सामान बांध लिया। जब वह चोर सामान को उठाने लगा तो सामान भारी होने से उसे उठाते नहीं बन रहा था। घर के मालिक ने वह सामान उसके सिर पर रखवा दिया। चोर जब अपने घर पहुंचा तो उसने अपनी माँ से कहा- कि आज मैं बहुत कीमती सामान लेकर आया हूँ। उसकी माँ ने पूछा- तूने अकेले इतना सामान कैसे उठाया तो उसने बताया मुझे उसी घर में किसी ने सामान मेरे सिर पर रखवा दिया था। माँ ने कहा - बेटा तूने जरूर पंडित जी के घर में चोरी की है क्योंकि अपने नगर में इतना उदार हृदय वाला कोई नहीं है। तू तुरंत जा और सामान वापिस करके आ। वह चोर जाकर पंडितजी के चरणों में गिर गया और उनसे क्षमायाचना की। जानते हो वे पंडितजी कौन थे? वे थे - ''पंडित श्री बनारसीदास जी''। जिन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की।

सुख की खोज

गृहस्थावस्था में तीर्थंकर मल्लिनाथ की ससुराल को बारात जा रही थी। आकाश मार्ग से इन्द्र अपनी देवों की सेना सहित अकृत्रिम चैत्यालयों की वन्दनार्थ जा रहा था। कुमार मल्लिनाथ को इन्द्र का वैभव कर पूर्व भव की याद आ गई। मैंने पूर्व भव में इन्द्र पद पाकर सागरों पर्यन्त इन्द्रियों के सम्पूर्ण सुख भोगे, किन्तु उनसे कभी तृप्ति नहीं मिली, बल्कि निरंतर तृष्णा और आकुलता ही बढ़ती रही। आज फिर मैं उसी इन्द्रिय विषयों की आग में झुलसने के साधन जुटाने की तैयारी कर रहा हूँ। धिक्कार है ! मेरी इस अज्ञानता को ? इतना सोच कर बारात को वहीं छोड़ कर सच्चे सुख की खोज करने जंगल की ओर चल दिये। निग्रन्थ दिगम्बर दीक्षा धारण कर उसी भव से मल्लिनाथ तीर्थंकर बनें। धन्य है इन जीवों की वैराग्य धारा ....

संकलन - पं. राजेन्द्र कुमार जी, जबलपुर

बताओगे तो पाओगे

पहेलियाँ

* ऊँचे-ऊँचे पर्वत वाला
सब तीर्थों से अलग निराला,
तीर्थंकर भी मुक्ति पाते
पुण्यवान ही दर्शन पाते ॥

* ग्यारह वर्ष में दीक्षा ले ली
आतम की निधियाँ बरसाईं
किया पंच परमागम काम
बतलाओ तुम उनका नाम ॥

* चार पुत्र वाला है वो
जीव द्रव्य से न्यारा वो।
इससे भेदज्ञान है करना
मुक्तिपुरी का सुख पाना ॥

* सबसे न्यारा उसका काम
सुख बरसाना उसका काम।
जानो उसको सुख पाओ
न जानो तो दु:ख पाओ ॥

[redacted]

150/- रु. के साथ यह फार्म भरकर भेजिये और पाइये अपने जन्म-दिवस के धार्मिक शुभकामनाओं के साथ आकर्षक उपहार - बालगीत सी.डी. एवं सुंदर ग्रीटिंग

सर्वोदय जन्म दिवस उपहार योजना

नाम :..... पिता का नाम .....

जन्मतिथि..... पता .....

.....

फोन नं. ..... मो. .....

1 वर्षीय सदस्यता राशि 150/-

पिन कोड.....

हमारा पता - सर्वोदय, 702 जैन टेलीकॉम, फूटाताल-जबलपुर (म.प्र.)

● कहानी

सच्ची सीख

गांधी जी उन दिनों साबरमती आश्रम में रहते थे। एक बार एक युवक उनके पास रहने आया, एक दिन वह युवक आश्रम की एक छोटी सी लड़की के साथ खेल रहा था। उसके हाथ में एक नींबू था। लड़की उस नींबू को लेना चाहती थी। वह नींबू लेने के लिये उछलती परन्तु युवक अपना हाथ ऊँचा कर लेता।

जब लड़की किसी तरह नहीं मानी, तो युवक ने हाथ घुमाया और झटका देकर झूठ बोला- यह लो मैंने नींबू को नदी में फेंक दिया।

लड़की ने उसकी बात मान ली। फिर वे दोनों चलने लगे, थोड़ी दूर चलने पर युवक ने जेब से रुमाल निकाला, तो उसके साथ नींबू निकलकर नीचे गिर पड़ा।

लड़की ने नींबू को धरती पर पड़ा देखा तो उसकी ओर झपटी नहीं, किन्तु गंभीर होकर बोली-तुमने मुझसे झूठ बोला - मैं बापूजी से कहूंगी कि तुम झूठे हो।

इसके बाद वह गांधी जी के पास गयी और उसने सारी बात उनसे कह दी। शाम को प्रार्थना के बाद गांधी जी ने उस युवक को बुलाकर पूछा तो युवक ने सारी बात बता दी। बोला -बापू मैनें जो किया वह तो मजाक था।

गांधी जी ने कहा-ये बुरी बात है। मजाक में भी झूठ नहीं बोलना चाहिए। मजाक में की गई बातें आगे चलकर आदत बन जाती है और बच्चों को गलत प्रेरणा मिलती है।

गांधीजी की बात में सच्चाई थी।युवक ने वह बात समझी और उस दिन से उसने मजाक में भी कभी झूठ नहीं बोला।

-निलय जैन, उदयपुर

अब नहीं खाऊंगा

विपिन - संस्कार ,आओ आओ बहुत दिन बाद आये। कहो क्या हाल है ? कहां रहे इतने दिन ?

संस्कार - बस यार मेरे दादाजी गांव से आये थे। उनके साथ टाइम का पता ही नहीं चलता था।

विपिन - अच्छा।

संस्कार- हां !और दादा जी जैन धर्म के अच्छे विद्वान भी हैं। उन्होंने मुझे जैन धर्म की बहुत सारी कहानियाँ सुनाई और बहुत सारी ज्ञान की बातें बताई ।

विपिन - (हंसकर) अच्छा फिर तो तू पंडित बन गया होगा।

संस्कार - ये मजाक की बात नहीं है विपिन । हमें तो अपने जैनधर्म के वैभव का ही पता नहीं।

विपिन - अच्छा ये धर्म की बातें छोड़। आज भोजन साथ में करेंगे।

संस्कार - हां हां चलो।

विपिन - मां विपिन आया है और यहीं भोजन करेगा।

मां - ठीक है बेटा तुम दोनों बैठो। मैं अभी भोजन लाती हूँ।

विपिन - और मां एक ही थाली लगाना हम दोनों एक ही थाली में साथ-साथ भोजन करेंगे।

संस्कार - नहीं विपिन हम दोनों एक साथ भोजन तो करेंगे लेकिन एक थाली में नहीं।

विपिन - अरे कैसी बातें कर रहे हो हमने तो कई बार एक ही थाली में भोजन किया है।

संस्कार - किया है पर अब नहीं करेंगे।

विपिन - अरे संस्कार साथ में भोजन करने से प्यार बढ़ता है।

संस्कार - प्यार नहीं पाप बढ़ता है।

विपिन - वो कैसे ?

संस्कार - देखो जब हम साथ में एक थाली में भोजन करते हैं तब अपनी मुंह की लार (मुंह का थूक) भोजन में मिल जाती है। एक दूसरे की लार मिलने से अनंत जीव उत्पन्न हो जाते हैं और हमारे पेट में जाकर वे मर जाते हैं।

विपिन- तुम्हें ये सब किसने बताया ?

संस्कार - मेरे दादा जी ने। हम तो अनजाने में ही भयंकर पाप कर रहे थे।

विपिन - भाई संस्कार मैं आज से प्रतिज्ञा लेता हूँ कि अब मैं किसी के साथ एक थाली में भोजन नहीं करुंगा।

संस्कार - ये हुई न बात।

विपिन - चलो हम साथ भोजन करते हैं लेकिन अलग-अलग थाली में।

बिना छना जल काम न लेंगे

: एक विचारणीय तथ्य

बच्चो रात्रि भोजन त्याग के संबंध में आप पिछले अंक में पढ़ ही चुके हैं। इस अंक में पढ़िये बिना छना पानी पीने के दोष -

जो भगवान जिनेन्द्र की आज्ञा माने उसे जैन कहते हैं। जैन कुल में पैदा होने से ही जैन नहीं होते बल्कि जैसा जिनवाणी में कहा है वैसा आचरण करने वाला जीव जैन है।

जैन व्यक्ति के सामान्य रूप से प्रमुख 3 लक्षण हैं।

1. प्रतिदिन जिनेन्द्र दर्शन।
2. रात्रि भोजन त्याग।
3. पानी छानकर पीना।

जैन शास्त्रों के अलावा अन्य धर्मों में भी पानी छानकर पीने का निर्देश है और डॉक्टर भी पानी छानकर पीने अथवा शुद्ध पानी पीने का निर्देश देते हैं। सर्वज्ञ भगवान ने बताया है कि बिना छने पानी की एक बूंद में अनंत जीव होते हैं। वैज्ञानिकों ने भी अपने यंत्रों से देखकर बताया है कि अनछने पानी में असंख्यात जीव होते हैं।

बिना छना पानी पीने से उसमें रहने वाले अनंत जीव मर जाते हैं और हमें हिंसा का बहुत पाप लगता है।

अनछने पानी पीने के दोष -

1. अनंत जीवों का घात 2. हिंसा का महापाप 3. स्वास्थ्य की हानि

छने पानी की मर्यादा

1. अनछने पानी को सफेद मोटे कपड़े से दोहरा करके छानें एवं छन्ने को छने पानी से बिल- छानी (जीवानी) करें।
2. पानी छानने के पश्चात् 48 मिनिट तक पानी उपयोग के योग्य रहता है उसके बाद पुन: बिना छना हो जाता है।
3. पानी को छानने के बाद उसमें लोंग, अनार का छिलका, सोंफ या सेंधा नमक चुटकी भर डाल देने से वह पानी छह घंटे तक छना हुआ कहलाता है।
4. पानी को छानकर उबालकर गर्म कर देने से पानी 24 घंटे तक अनछना नहीं होता।

तो बच्चों अब जब स्कूल अथवा कहीं पानी लेकर जायें तो छने हुये पानी में लोंग आदि डाल लेवें अथवा छने हुये पानी को गर्म करके ले जायें।

पेप्सी, कोकाकोला, मिरिंडा आदि में दोष :-

भारत सरकार द्वारा अनेक शीतल पेयों (पेप्सी आदि) की जांच की गई और सेंटर फॉर सांइस एंड एनवायरमेंट (CSE) ने विशेष जांच करवाई जिसमें निम्न प्रकार के तथ्य सामने आये हैं-

(1) पेप्सी, कोकाकोला में लिंडेन कीटनाशक और न्यूरोटॉक्सिन, क्लोरो पायरीफॉस जैसे जहरीले रसायन पाये गये।

इस तरह धार्मिक और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बिना छना जल और शीतल पेयों का सेवन हानिकारक है।

ये भी जानें -

(1) पेप्सी और कोकाकोला कंपनियाँ 190 देशों में 5 लाख करोड़ का कारोबार करती हैं। हमारे भारत देश की बहुमूल्य मुद्रा विदेश जा रही है।

(2) कोला कंपनी द्वारा पोलेण्ड में बेची जाने वाली बोनोक्सा मिनरल वाटर में विषैला पदार्थ पाया गया इस कारण कपंनी ने 1 लाख हजार बोतलें वापस बुला लीं।

(3) इटली सरकार द्वारा शीतल पेय कंपनी पर सिंतबर 1999 में 1.61 करोड़ डॉलर का जुर्माना किया गया।

(4) कोका कोला कंपनी ने जनवरी 2001 में 10 ड्रम विषैला ऑयल मनीला को पेय जल देने वाली मारीकिना नदी में डाल दिया। जिससे पानी विषैला हो गया।

(5) जून 2004 में बिट्रेन में कोकाकोला की पानी की बोतलों में कैंसर फैलाने वाले रसायन पाये गये हैं।

(6) बेल्जियम के एक स्कूल में कोकाकोला पीकर बच्चे बीमार हो गये जिससे 14 जून 1999 को बेल्जियम में कोकाकोला प्रतिबंधित कर दी गयी।

(7) बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारत जैसे विकासशील देशों को आर्थिक रूप से गुलाम बनाने का षड्यंत्र रचा जा रहा है।

बच्चों, अब आप ही समझें कि अनछना पानी और कोल्ड ड्रिंक्स आपके लिये हानिकारक हैं या लाभदायक । इन्हें आप त्यागें और अच्छे बच्चे बनें। यही हमारी भावना है।

तथ्य स्त्रोत : नवभारत टाइम्स, 23 अगस्त 2006
नवभारत : 24 अगस्त 2006
दैनिक भास्कर : 2 अगस्त 2006

बाल प्रतिभा

बात 2006 में सम्पन्न देवलाली बाल संस्कार शिविर की है। बाल संस्कार शिविर में मुंबई के साथ-साथ अन्य नगरों के लगभग 300 बच्चे आये थे। उन्हीं बालकों में देवलाली में निवास कर रही ब्र. बहनों की प्रेरणा से..... बालक भी आया था। लगभग 12 वर्ष की उम्र का यह बालक जैन न होते हुए भी ..... की जिनधर्म के प्रति रुचि सराहनीय थी। उसने शिविर के समस्त कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। अपने मधुर व्यवहार से वह सबका चहेता बन गया था। शिविर के समापन के अवसर पर सभी बालक स्वेच्छा से शिविर के अनुभव बोल रहे थे। ..... ने

धर्म की स्पिन बाल से पाप के विकेट उड़ गये।
सम्यक्त्व के शॉट से मिथ्यात्व के छक्के छूट गये॥
फिर फास्ट बाल से रागद्वेष की गिल्लियां उड़ा दी।
फिर आत्मा का सहारा लेकर कर्मों पर विजय पाली॥

मिली प्रेरणा बदला जीवन

कहा कि मुझे पहली बार इतनी अच्छी और सच्ची ज्ञान की बातें जानने को मिली है और मैं आज से रात्रिभोजन और जमीकंद (आलू, प्याज आदि) का त्याग करता हूँ। उसकी घोषणा सुनकर हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। तभी पंडित जी ने पूछा- तुम्हारे यहाँ रात्रि में भोजन बनता है और सभी लोग आलू-प्याज खाते हैं तो तुम क्या करोगे। ..... ने बहुत साहस के साथ कहा- मैं किसी भी परिस्थिति में रात्रि भोजन व आलू प्याज का सेवन नहीं करुंगा। चाहे मुझे भूखा ही क्यों न रहना पड़े।

धन्य है वह बालक। सभी बच्चों को ..... से प्रेरणा लेनी चाहिए।

!!☆!!☆!!☆!!☆!!☆!!☆!!

बुद्धिमानी के सूत्र

खेलना कम	-	पढ़ना ज्यादा
पढ़ना कम	-	विचारना ज्यादा
विचारना कम	-	आचरना ज्यादा
बोलना कम	-	सुनना ज्यादा
सुनना कम	-	उतारना ज्यादा
शिक्षा देना कम	-	शिक्षा लेना ज्यादा

चित्र देखो- कहानी लिखो

Look this Picture & Write Story

इस चित्र को ध्यान से देखें और एक सुंदर सी कहानी लिखकर भेजें। ध्यान रहे कहानी मौलिक (स्वयं के द्वारा लिखी हुई) धार्मिक, जैन सिद्धांतों के या किसी शिक्षा को बताने वाली होना चाहिए। शब्द सीमा अधिकतम 150 हो। कहानी सुंदर लिखावट अथवा टाइप की हुई (हिन्दी,अंग्रेजी या गुजराती) में होना चाहिए। सर्वोत्कृष्ट कहानी को पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा एवं उसे पुरुस्कृत किया जायेगा।

हमारा पता है
कहानी विभाग, सर्वोदय 702, जैन टेलीकॉम
फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.)

ये है पुरुस्कृत कहानी

नयन जैन, इन्दौर कक्षा- सातवीं

सक्षम कक्षा आठवी में पढ़ने वाला होनहार लड़का था। उसके माता पिता बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के थे और सक्षम को भी जिनधर्म की महानता के बारे में बताते थे। सक्षम ने नियम लिया था कि जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के बाद ही भोजन करूँगा और वह रोज मंदिर जाकर दर्शन के बाद ही भोजन करता था।

माता पिता ने आगे की पढ़ाई के लिये उसे दूसरे शहर के बड़े स्कूल में एडमीशन करा दिया। वहाँ होस्टल में रहने की व्यवस्था थी। परंतु जिन मंदिर दूर था। और उसे होस्टल से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी। ऐसी परिस्थिति में भी सक्षम ने होस्टल में भोजन करने से मना कर दिया। अध्यापक ने कहा - भूखा कब तक रहेगा जब भूख लगेगी तो अपने आप भोजन कर लेगा। परंतु सक्षम ने तीन दिन तक भोजन नहीं किया। जिससे वह बीमार हो गया फिर उसे तुरंत जिनमंदिर ले जाया गया। वह जिनदर्शन कर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसके बाद उसे रोज मंदिर जाने की आज्ञा दे दी गई।

पिछले अंक में हमने आपको इस चित्र के आधार पर कहानी लिखने की प्रेरणा दी थी। उसके जवाब में अनेक बच्चों ने कहानियाँ लिखकर भेजीं।

इनकी कहानियाँ भी सराहनीय रहीं -

1. देशना पाटनी उम्र - 7 वर्ष, छिंदवाड़ा
2. अनादि पाटनी, छिंदवाड़ा
3. अचिन्त्य जैन, खनियाँधाना

अंतर खोजिये

नीचे दिये हुये चित्रों में 10
अंतर हैं इन्हें खोजिये

Find Differences

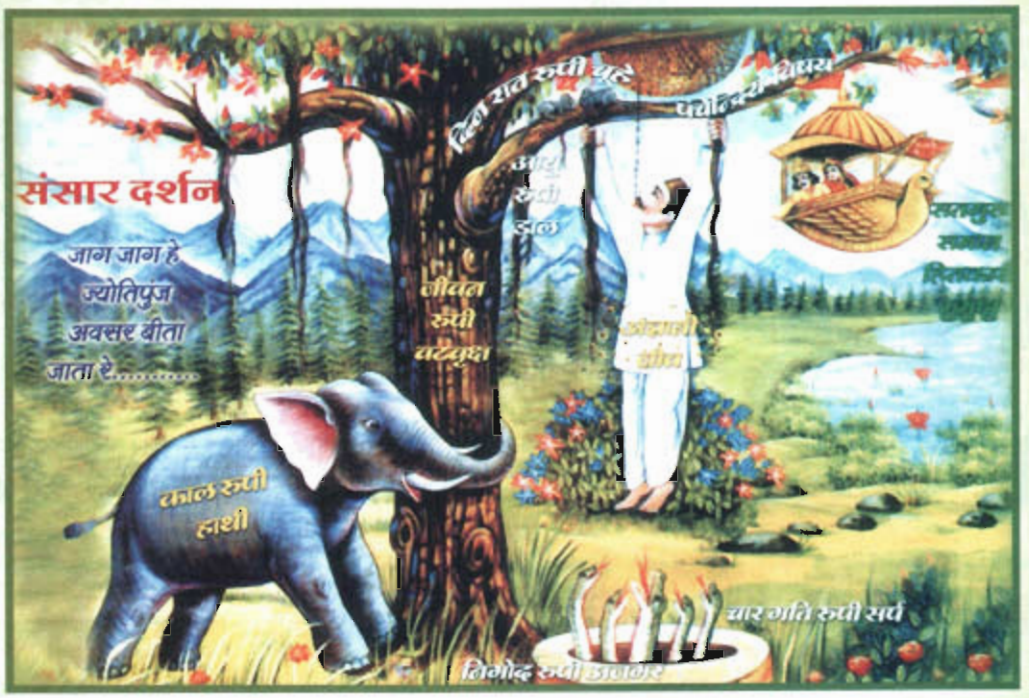

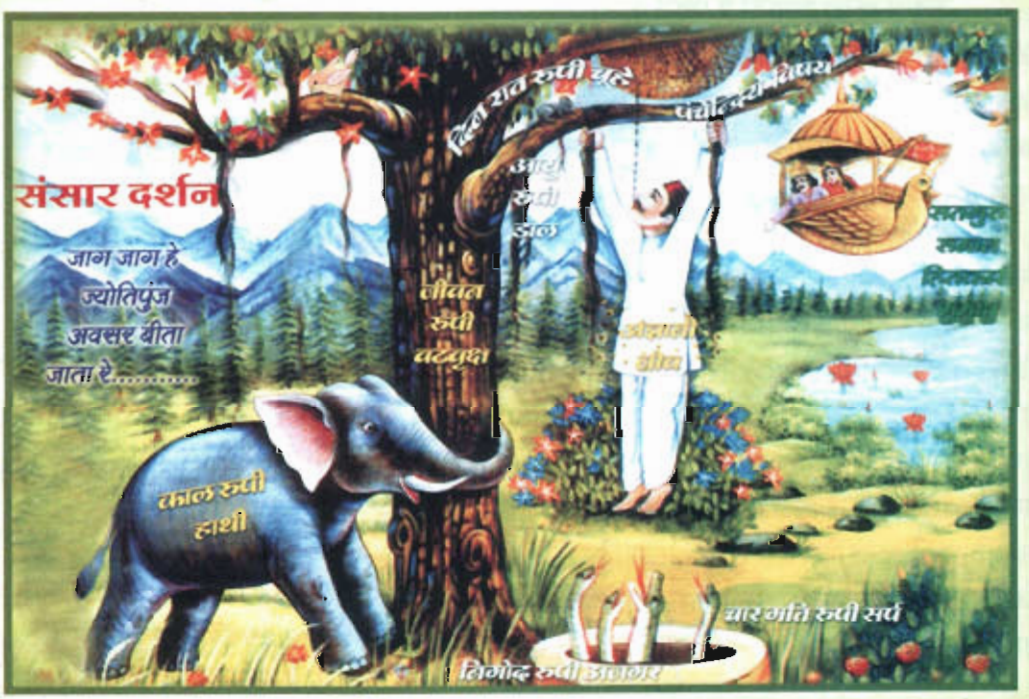

क्या आप जानते हैं -

बच्चो ! आपने पिछले अंक में तीर्थंकर भगवान के जीवन के बारे में जानकारी पढ़ी थी। इस अंक में पढ़िये समवशरण के बारे में।

1. तीर्थंकर भगवान के धर्मोपदेश देने का जो सभास्थान है वह समवशरण कहलाता है।
2. अरहंत भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति होने पर इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवशरण की रचना करते है।
3. समवशरण की रचना पृथ्वी से पाँच हजार धनुष ऊँचाई पर आकाश में होती है। जिसमें चढ़ने के लिये बीस हजार सीढ़ियाँ होती हैं।
4. समवशरण का ऐसा अतिशय होता है कि अंधों को दिखने लगता है, बहरे सुनने लगते हैं, लूले चलने लगते हैं तथा गूंगे बोलने लग जाते हैं।
5. समवशरण में सिंह-हाथी, बाघ-गाय, बिल्ली-चूहा परस्पर जाति-विरोधी जीव भी अपनी बैर बुद्धि को छोड़कर परस्पर मित्र हो जाते हैं।
6. समवशरण में विराजमान अरहंत भगवान का मुख चारों दिशाओं में दिखता है।
7. समवशरण का विस्तार एक योजन से लेकर बारह योजन का रहता है।
8. समवशरण में साढ़े बारह करोड़ प्रकार के बाजों की मधुर ध्वनि होती है जिसे सुनने मात्र से भूख-प्यास आदि सभी रोगों की पीड़ा नष्ट हो जाती है।
9. जहाँ समवशरण की रचना होती है वहाँ छः ऋतु के फल-फूल एक साथ फलते हैं।
10. समवशरण में देवों द्वारा बनाये गये अशोक वृक्ष को देखते ही सभी लोगों का दुःख नष्ट हो जाता है।
11. समवशरण में बारह सभायें होती हैं। पहली सभा में गणधरादि मुनिराज बैठते हैं, दूसरी सभा में कल्पवासी देवों की देवियाँ, तीसरी सभा में गणिनी सहित आर्यिका व स्त्रियाँ, चौथी सभा में चक्रवर्ती सहित मनुष्य, पांचवीं सभा में ज्योतिषी देवों की देवियाँ, छटवीं सभा में व्यंतर देवों की देवियाँ, सातवीं सभा में भवनवासी देवों की देवियाँ, आठवीं सभा में भवनवासी देव, नवमीं सभा में व्यंतर देव, दसवीं सभा में ज्योतिषी देव, ग्यारहवीं सभा में कल्पवासी देव, बारहवीं सभा में सभी तिर्यंच बैठते हैं।

दिमागी कसरत

नीचे दिये खंडों में प्रसिद्ध सात तीर्थक्षेत्रों के नाम दिये गये हैं उन्हें खोजियें।

ला	ष	ग	ज	पं	था	सं	चं	ता	ल
कु	ण्ड	ल	पु	र	द्य	पा	ब	गि	ए
ल	बी	रि	गी	द्ध	गी	कै	ज्ञ	क्षं	बू
ए	चं	ता	गी	र	ख	शि	द	म्मे	स
बू	जी	तुं	पा	ब	ढ़	फ	ठ	त्त	द्ध
रि	गी	द्ध	मु	क्ता	गि	र	कै	ज्ञ	क्षं
मां	ढ़	ड्डी	णे	पू	म्म	ढ़	ग	व	दे

1 ..... 5 .....

2 ..... 6 .....

3 ..... 7 .....

4 .....

उल्टे पुल्टे अक्षरों से सही शब्द बनाओ

जैसे - म ा अ त - आतम

ा र व ी ग त ी -

न्द न अ न भि -

धि ा न सु व थ ि -

न ी ण ि ा व ज -

ड ा भ ण ल म -

आओ सीखें

ABC OF JAIN DHARAMA

जैनधर्म की ए, बी, सी

You are in my every though
Let me lead life as you taught
SUMATINATH give wisdom Nice.
So that I fall never twice.

I like you most great God.
you face is rosy red.
PADAMPRABH swami so high
you are gret. I don't forget you.

I am candle you are Light.
I am eye and you are sight.
I am heart and beat you are.
SUPARSHWANATH not you are far.

Come come come all childrens
see my CHANDRAPRABHJI soon.
why you look so dall and pale ?
Sea of sorrow you can sail.

मेरे हर विचार में भगवान आप हैं।
मैं वैसा ही जीवन जीऊँ, जैसा आपने सिखाया है,
सुमतिनाथ भगवान आप मुझे सद्बुद्धि दो,
जिससे कि मैं दुबारा कभी न गिरूँ।

मैं आपको महान भगवान के रूप में चाहता हूँ,
भगवन आपका चेहरा गुलाब की तरह लाल है,
पदमप्रभु भगवान आप बहुत महान हैं।
आप महान है,
मैं आपको नहीं भूल सकता।

मैं एक मोम की बाती हूँ, जिसकी रोशनी आप हैं।
मैं एक आँख हूँ, जिसकी ज्योति आप हैं।
दिल मेरा है जिसकी, धड़कन भगवान आप हैं।
सुपार्श्वनाथ भगवान आप मुझसे, ज्यादा दूर नहीं हैं,
आप तो मेरे बहुत ही करीब हैं।

आओ बच्चों सब मिलकर के आओ।
चन्दप्रभु के शीघ्र दर्शन पाओ।।
अनमने सी ढीले लगते क्यों हो तुम।
छोडो दुख के सागर को अब न रहो गुमसुम।।

विभिन्न धार्मिक चिन्हों की संख्या नीचे दिये खंड़ों में लिखे।

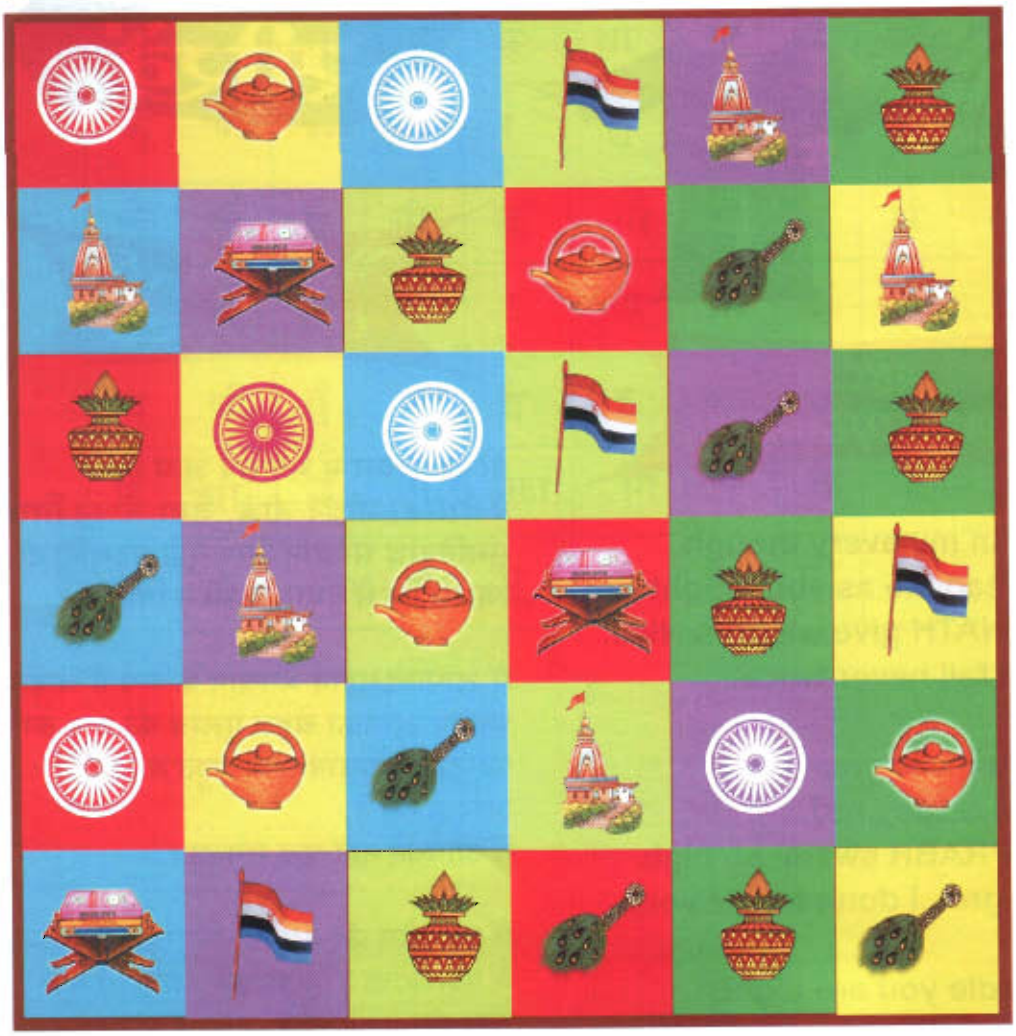

शासनध्वज

जिनवाणी

जिनमंदिर

कलश

धर्मचक्र

कमंडल

पीछी

आपकी पेंटिंग

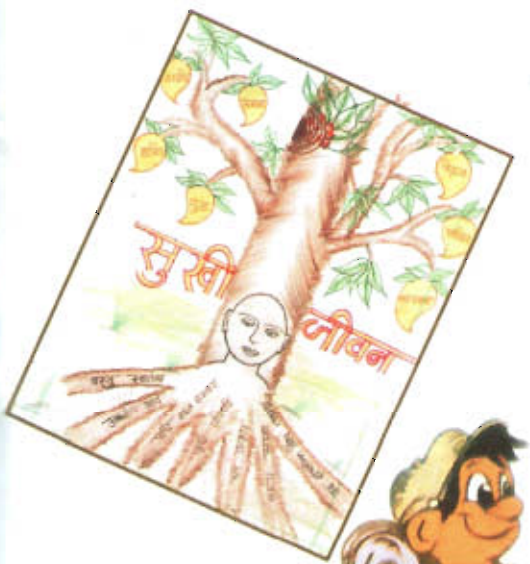

वैशाली, अहमदाबाद

कृतिका, मुंबई

राज, भीलवाड़ा

पल्लवी , इंदौर

कु. प्रिया जैन

वहकती चेतना

बाल क्लब

आपकी पेंटिंग

आप किसी भी धार्मिक विषय पर पेंटिंग हमें भेजिये। चयन होने पर उसे यहां प्रकाशित किया जावेगा।

KNOW Our Symbol

Mandir Shikhar

A Shikhar is the head and highest point of a Mandir. It indicates the presence of Jin-Mandir from a distance.

Kalash

Kalash is an ornament of Temple. made up of mostly Gold metal. It acts as a good conductor of cosmic energies.

Jain Dhawaja

A Jain Dhwaja is a flag having five colors. representing the Panch Parameshtis (Five supreme souls) The flag indicates spread of Religion (Dharma)

Maanastambh

This is a tall tower like structure present In the temple premises. At it's topmost point are four statues of Jin facing the four directions. The view of idol of god at that height is very symbolic.
It is with pride that we look 'down' on someone. But when we look'up at idols in maanasthambh, It gently reminds us that our pride and all the things that make us feel superior to others are false.

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

१. प्रतिमा पर नीचे प्रशस्ति क्यों लिखी जाती है ?
उ० प्रशस्ति लिखने से सामाजिक इतिहास सुरक्षित रहता है।
- मंयक जैन, बरगी-जबलपुर

२. दूध मांसाहारी है या शाकाहारी ?
उ० दूध शाकाहारी है क्योंकि वह शरीर का अंग नहीं है, दूध प्राप्त करने से पशु को कष्ट नहीं होता है।
- गुलशी जैन, जबलपुर

३. मनुष्य मरने के बाद क्या फिर मनुष्य बन सकता है ?
उ० हाँ बन सकता है, मनुष्य प्रत्येक गति में जा सकता है ।
- भव्य जैन, भोपाल

४. भारत में जैन तीर्थ स्थल सबसे अधिक किस प्रदेश में है ?
उ० मध्य प्रदेश में।
- विधि शाह, मुबंई

५. देवता और जिनेन्द्रदेव में क्या अंतर हैं ?
उ० देवता हमारी तरह संसारी होते हैं और भगवान सर्वज्ञ, पूर्ण सुखी व वीतरागी होते हैं।
- परिणति जैन, बैंगलोर

६. तीर्थंकर के गर्भ में आने के समय प्रतिदिन कितने रत्नों की वर्षा होती है।
उ० प्रतिदिन प्रात: दोपहर और शाम को साढ़े १० करोड़ रत्नों की वर्षा होती है।
- विप्लव मेहता, अहमदाबाद

अरहंत

चार घातिया कर्म को नाशा,
श्री अरहंत कहलाते हैं।
राग द्वेष से रहित निराले
सबके मन को भाते हैं।।
तीन काल और तीन लोक के
सब द्रव्यों को जानते।
सबके ज्ञाता दृष्टा रहकर
निज में ही सुख भोगते।।

coming soon
मनोरंजन के साथ, ज्ञान का खजाना
k ज्ञान सोपान एवं मुक्तिद्वार(जैन गेम)
k चेतन चित्रावली - ड्राईंग बुक
k चेतनराजा -ज्ञान का खजाना भाग -1
k चैतन्य भक्ति लहर-पाठशाला गीत सी.डी.
k आओं मिलायें - कम्प्यूटर गेम
जनज्ञान प्रभावना की भावना के साथ जानकारी एवं प्राप्ति हेतु संपर्क करें
मंगलम् मीडिया इलाहाबाद बैंक के बाजू में,
गोलगंज -छिंदवाड़ा 94243 74855, 245624 (07162)

रात्रि में राजमहल के पास एक वृक्ष के नीचे बैठ कर भी यही चिल्लाता। एक दिन...
प्राणनाथ। देखो तो नीचे यह क्या कह रहा है? सत्यघोष इसके पांच रत्न नहीं
प्रिये। आराम से सो जाओ। यह तो कोई पागल दीखता है। भला हमारे पुरोहित जी ऐसा कर सकते हैं क्या?

रानी के आग्रह पर राजा ने उस पागल का न्याय रानी को सौंप दिया और रानी ने पुरोहित जी को चौपड़ खेलने के लिये आमन्त्रित किया। चौपड़ में पुरोहित जी अपनी अंगूठी व जनेऊ भी हार गये। फिर...
अरी दासी। तू जरा पुरोहित जी के घर जा कर पुरोहितानी को यह अंगूठी और जनेऊ दिखा कर कहना कि पुरोहित जी ने वे पांच रत्न मंगाये हैं जो बणिक समुद्रदत्त साल भर पहले आपके यहां रख गया था।
अभी लाई महारानी जी।

राजदरबार में...
हे बणिक महोदय। ये आपके सामने बहुत से रत्न रखे हैं। क्या तुम इनमें से अपने पांचों रत्न पहिचान सकते हो?
हां हां राजन! क्यों नहीं। देखिये कृपासिन्धु। ये हैं मेरे पांचों रत्न।

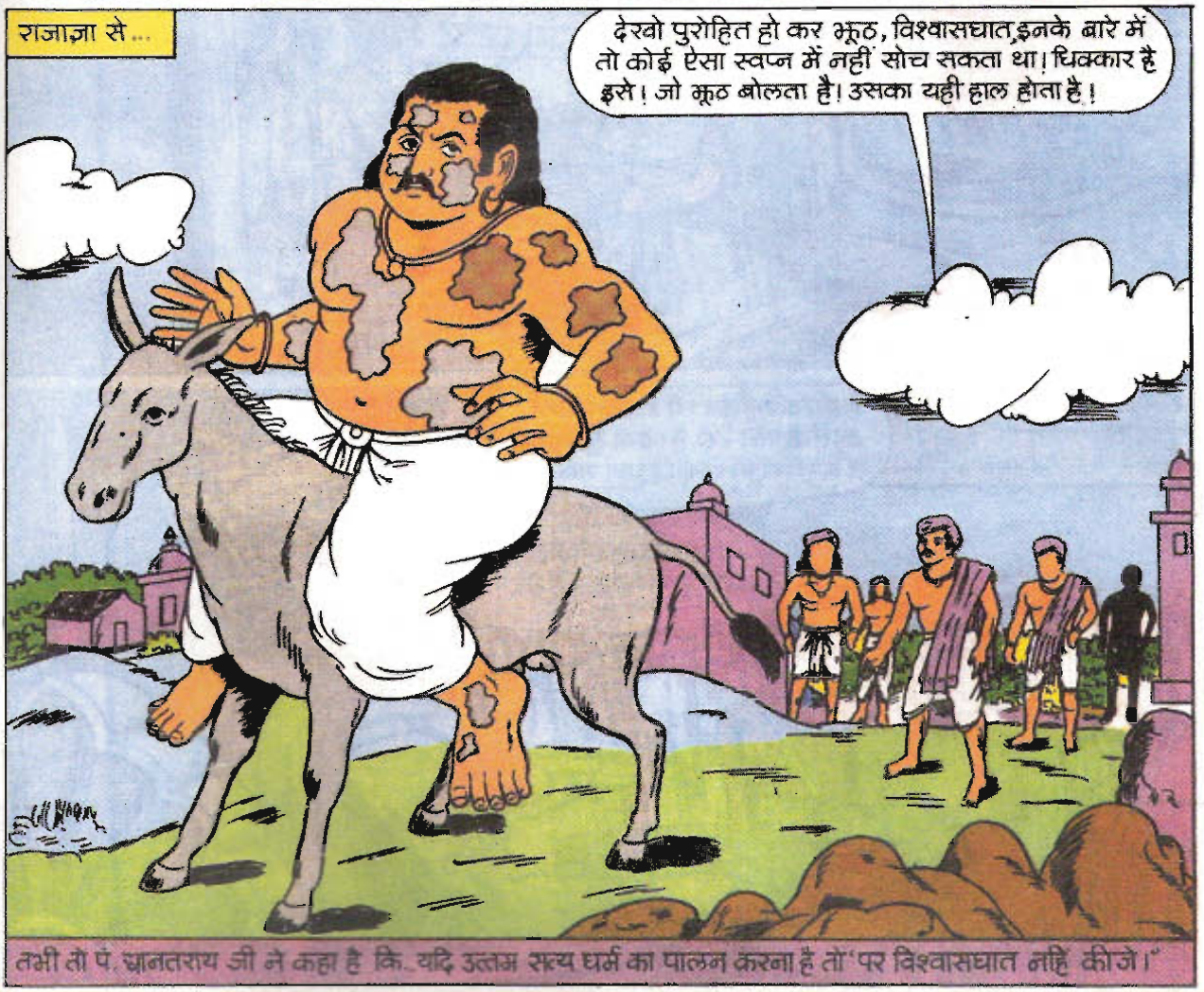

तभी तो पं. धानतराय जी ने कहा है कि..यदि उत्तम सत्य धर्म का पालन करना है तो 'पर विश्वासघात नहिं कीजे।'